Page No. ______
Date ______

[इकाई-3 जेण्डर विमर्श और शिक्षा]

* जेण्डर : अवधारणा और संदर्भ, पितृसत्ता व नारीवादी विमर्श के संदर्भ में जेण्डर विभेद

जेण्डर का अर्थ है - महिला और पुरूष। हमारे समाज में पुरूषों को ज्यादा महत्व दिए जाते आ रहा है। समाजशास्त्र के विद्वानों ने पितृसत्ता को प्राचीन काल से चली आ रही एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में स्वीकार किया है। इस व्यवस्था में पिता का प्रतिनिधित्व उसका बेटा करता है। पिता के संपत्ति पर बेटा का हक होता है। पिता के नही रहने पर बेटा उस घर का मुखिया कहलाता है। और बेटा का जिम्मेदारी होता है कि वो अपने परिवार का सुरक्षा करें। घर की सभी महिला को उसके कहे अनुसार कार्य करना होता है। पुरूष को ज्यादा बुद्धिमान और ताकतवर समझा जाता है। जबकि यह माना जाता है कि महिला का दायित्व है घर का काम करना, बच्चा का लालन-पोषण करना। शादी के बाद महिलाओं को अपने पिता के घर में कोई अधिकार नही मिलता है। सभी धर्मों में भी जिस तरह पुरूष-महिला के काम में बँटवारा किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिला-पुरूष में भेदभाव किया जाता है।

लेकिन आज के समय में इस परिदृश्य में काफी हद तक बदलाव दिख रहा है। आज लड़कियों को समान शिक्षा का अधिकार दिया

Scanned by CamScanner

गया है। महिलाओं के हक में सरकार ने विभिन्न कानून को पारित किया है। बहुत सारी गैर-सरकारी संस्था भी महिलाओं के लिए काम कर रही है। समाज में भी जागरूकता आई है। पिता अपने बेटों और बेटियों सबको समान हक देने का प्रयास कर रहें है। इसी तरह सरकार और समाज एकजुट होकर महिलाओं के हक में काम करेंगे तो एक दिन यह कुरीतियां समाज से पूरी तरह खत्म हो जाएगा। वैसे महिलाएँ आज हर क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। वे पुरुषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर काम कर रही है। पिता के संपत्ति में महिलाओं का भी अधिकार हो, इसके लिए कानून भी बना दिया गया है।

* बच्चों के समाजीकरण में जेण्डर की भूमिका: बचपन, परिवार, समुदाय, मीडिया

बच्चों के समाजीकरण में बचपन, परिवार, समुदाय और मीडिया अहम भूमिका निभाता है। बच्चे सबसे पहले परिवार और समुदाय से जुड़ते है। बच्चे बचपन से ही देखते आते है कि माँ घर का काम करती है। वो खाना बनाती है, कपड़ा साफ करती है, घर का साफ-सफाई करती है। जबकि पापा बाहर का काम करते है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

वो पैसा कमा कर लाते हैं। इससे बचपन से ही उनकी सोच ऐसी होने लगती है कि लड़कियों का काम घर का काम करना है और लड़कों का काम बाहर का काम करना है।

जबकि ऐसे परिवार में पल रहा बच्चा जहां दोनों पति-पत्नि मिलकर काम करते हैं। ऐसे में बच्चों में ऐसी बात नहीं पनपती है। उनके मन में महिला-पुरुष को लेकर अलग धारणा नहीं बनती है।

मीडिया भी इसमें भूमिका निभाता है। जब बच्चे बड़े होते हैं वो टेलीविजन, मोबाईल का प्रयोग करने लगते हैं। उसमें वो समाचार सुनते हैं। जिसमें तरह-तरह का खबर आते रहता है। जिसका असर बच्चों के मस्तिष्क पर पड़ता है।

* शिक्षा व्यवस्था व विद्यालय में प्रचलित जेण्डर विभेद: पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकें, कक्षायी प्रक्रियाओं, विद्यार्थी-शिक्षक (स्टूडेंट-टीचर इंटेरैक्शन) संवाद के विशेष संदर्भ में

शिक्षा व्यवस्था में भी कहीं-न-कहीं जेण्डर विभेद दिखता है। जिसे दूर करने का जरूरत है। बच्चों के पाठ्यपुस्तकों में देखा जाए तो घर का काम करते हुए महिलाओं को दिखाया जाता है। और ऑफिस का काम करते हुए पुरुषों को दिखाया जाता है। हालांकि अब इसमें बहुत हद तक बदलाव किया गया है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

महिलाओं को बाहर का काम करते हुए दिखाया गया है। कल्पना चावला, इंदिरा गाँधी, मदर टेरेसा, झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई इत्यादि के बारे में पढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। जिससे बच्चों का जेण्डर के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनता है। किंतु अभी भी पुरुषों को घर का काम करते हुए नही दिखाया जाता है।

कक्षायी प्रक्रिया में भी जरूरी है कि शिक्षक छात्र-छात्राओं के साथ समान व्यवहार करें। उन्हें समान अवसर प्रदान करें। उनमें जेण्डर को लेकर कोई नकारात्मक बातें न पनपे। इस बात का विशेष ध्यान देना चाहिए। पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों खेल-कूद, गीत-संगीत में भी बराबरी का अवसर देने का जरूरत है। जिससे छात्राओं का आत्मविश्वास बढ़ेगा।

* जेण्डर संवेदनशीलता और समानता में शिक्षा की भूमिका

किसी भी गलत धारणा और कुरीतियों को खत्म करने में शिक्षा का अहम भूमिका होता है। शिक्षा सही-गलत का पहचान करवाता है। इसी तरह शिक्षा के द्वारा बच्चों को यह ज्ञात होता है कि लड़के और लड़कियाँ दोनों सभी कार्य को कर सकते है। कोई भी इंसान लड़का-लड़की होने से पहले इंसान होता है। और दोनों को समान अधिकार और हक मिलना ही

चाहिए। ग्रामीण इलाकों में महिला शिक्षा पर अत्यधिक जोड़ देने का जरूरत है। इसके लिए सरकार कई तरह की योजनाएं भी बनाई है। वैसे तो सभी बच्चों के लिए शिक्षा मुफ्त में कर दी गई है। 'सर्व शिक्षा अभियान' के द्वारा सभी बच्चों को विद्यालय से जोड़ा गया। और छात्राओं को प्रोत्साहित करने के लिए 'मुख्यमंत्री बालिका साईकल योजना' तथा छात्राओं के लिए अलग से शौचालय का व्यवस्था किया गया। समाज में महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए सरकार हमेशा प्रयासरत है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner